श्रीः

कनककुसुम

वा

मस्तानी.

अर्थात्

बाजीराव पेशवा और मस्तानी

की

कहानी

* उपन्यास *

श्रीकिशोरीलालगोस्वामि-लिखित.

" अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं,
कूर्म्मो बिभर्त्ति धरणीं खलु पृष्ठकेन ।
अम्भोनिधिर्वहति दुस्सहबाडवाग्निं,
अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ॥ "
(चौरपञ्चाशिका)

श्रीछबीलेलालगोस्वामि-द्वारा
स्वकीय—श्रीसुदर्शन प्रेस, वृन्दावन में
मुद्रित और प्रकाशित.

सन् १९१४ ईस्वी.

दूसरी वार २०००] * [मूल्य छः आने]